मानवाधिकार संगठन, कितना औचित्य ?

बजरंगलाल

सम्पूर्ण विश्व में प्रत्येक मनुष्य की तीन प्रकार की भूमिकाए हो सकती है। 1.व्यक्ति 2.नागरिक 3. मानव। तीनों भूमिकाएँ बिल्कुल पृथक पृथक भी होती ह और जुडो हुई भी। सृष्टि पर निवास कर रहा प्रत्येक जीवित मनुष्य व्यक्ति तो है ही चाहे उसे नागरिक अधिकार प्राप्त हों या न हो चाह उसमें मानवता के गुण हा या नही एक अच्छा आदमी भी व्यक्ति है और अपराधी भी। किसी के व्यक्ति के रूप में जीवित रहने का अधिकार कुछ विशेष और असामान्य स्थिति में ही छीना जा सकता है सामान्यतया नही किन्तु नागरिक की परिभाषा कुछ भिन्न होती है। नागरिक किसी स्थापित व्यवस्था के नियम कानूनों से बंधा होता है। उसे व्यक्ति के अधिकारों से हटकर कुछ विशेष अधिकार कुछ शता पर उपलब्ध होते ह। किसी व्यक्ति के नागरिक अधिकार व्यवस्था वापस ले सकती है या कटौती कर सकती है। काई व्यक्ति भी अपने नागरिक अधिकार वापस देकर किसी अन्य व्यवस्था की नागरिकता स्वीकार कर सकता है इस पालन करे व्यक्ति का तीसरा स्वरूप मानव या मानवता का है व्यक्ति का यह तीसरा ऐसा स्वरूप है जिसमें व्यक्ति स्व प्रेरणा से ऐसे कार्य करता है जिनके लिये न तो वह प्रतिबंधित है न ही बाध्य। यही कार्य उसके मानवीय गुण माने जाते ह।

राष्ट्रों की स्थिति कुछ भिन्न प्रकार की है। अब तक दुनियाँ में कोई विश्व व्यवस्था नही बनी है जो राष्टो की आन्तरिक गतिविधियों पर नियंत्रण में आशिक ही सफल है अन्यथा अब तक की व्यवस्था उसके प्राकृतिक अधिकारों में उच्चश्रृंखलता पूर्वक कटौती नही कर सकती किन्तु विश्व व्यवस्था के अभाव क कारण राष्ट्रो ने स्वय को ऐसा अधिकारां संपन्न घोषित कर दिया है कि वह व्यक्ति के अधिकारों में कभी कितनी भी कटौती कर सकता है। यह आज मानव समाज के समक्ष सबसे बडो समस्या है कि राष्ट्रवाद मानववाद पर अधिकार जमाये बैठा है किन्तु मानववाद बिल्कुल बेवस और लाचार है। दुनिया में तीन प्रकार की व्यवस्थाएँ काम कर रही है। 1. तानाशाही 2. वामपंथी 3. प्रजातांत्रिक। तानाशाही व्यवस्था में एक व्यक्ति सर्वाधिकार सम्पन्न होता है तथा अन्य किसी भी व्यक्ति के पास नागरिक अधिकार तो होते ह किन्तु प्राकृतिक या नैसर्गिक अधिकार नही होते। वामपंथी व्यवस्था तानाशाही का एक सुधरा हुआ स्वरूप है जिसमें तानाशाही व्यक्ति की न होकर व्यक्ति समूह की होती है प्रजातंत्र इस सब में अच्छी व्यवस्था मानी जाती है। जिसमें व्यक्ति को सामान्यता प्राकृतिक अधिकर प्राप्त तथा सुरक्षित होते है। प्रजातांत्रिक देश सदा ही तानाशाही या वामपंथी व्यवस्था को अमानवीय मानते रहे ह किन्तु दुनिया के प्रत्येक राष्ट्र का अपनी आन्तरिक व्यवस्था की पूर्ण स्वतंत्रता हाने से ये देश ऐसे तानाशाह या वामपंथी देशों की आन्तरिक व्यवस्था में काई हस्तक्षेप नही कर सकते थे। अतः ऐसे देशों की आतरिक अमानवीय गतिविधियों को आधार बनाकर उन्हें दुनिया में बदनाम करने के उद्देश्य से पश्चिमी देशों में मानवाधिकार का ताना बाना बुना और अपने खर्चे के बल पर पूरी दुनिया में मानवाधिकार उल्लघन की निगरानी और प्रचार का काम करते थे। ये पश्चिमी राष्ट दुनिया भर में फैले ऐसे संगठनों को भरपूर आथिक सहायता देते थे और इसके बदले में ये संगठन साम्यवादी देशों और कभी कभी तानाशाह देशों के अपने नागरिको पर किये जाने वाले अत्याचारों का खूब प्रचार करते थे वामपंथियों को इन मानवाधिकार संगठना के प्रचार से बहुत परेशानी और बदनामी हुआ करती थी क्यांकि ये मानवाधिकार सगठन कभी और किसी भी स्थिति में न्याय अन्याय की समीक्षा नही करते थे न ही ये कभी अन्याय के विरूद्ध राज्य की मदद करते थे इनका तो सिर्फ एक ही काम था व्यक्ति के विरूद्ध राज्य के अन्याय और अत्याचार का विरोध करना। चूकि प्रजातात्रिक देशों ऐसी स्थिति प्रायः नही होती थी और साम्यवादी देशों में यह आम बात थी अतः प्रजातांत्रिक देश विशेषकर पश्चिम को इस काम में बहुत मजा आता था।

वामपंथियों ने इससे निपटने का एक नया तरीका खोज निकाला ये लोग धीरे धीरे ऐसे संगठनों में प्रवेश करने लगे। पश्चिम के देशों में तो ये कम प्रवेश किये लेकिन अन्य देशों में ये बडो संख्या में मानवाधिकार संगठनों से घुस गये और भारत में तो इनका मानवाधिकार संगठनों पर एक सत्र कब्जा हो गया। ये लोग धीरे धीरे प्रजातांत्रिक देशों में राज्य द्वारा किये जाने वाले उल्लंघना को उजागर करने लगें। मिया की जूती और मियां का सर वही कहावत चरितार्थ हुई पश्चिम के प्रजातांत्रिक देशों के धन के बल पर ये प्रजातांत्रिक देशां की ही खुलकर आलोचना भी करने लगे और पोल भी खोलने लगे। इराक युद्ध में इनके प्रयासों का व्यापक असर हुआ। कई जगह अमेरिका आदि देशो को परेशानिया उठानी भी पडो और शर्मिन्दगी भी किन्तु अमेरिका आदि देश इस संबंध में कुछ नही कर सके चूकि अपने ही बनाये नियम कानूना का पालन उनकी मजबूरी भी थी और कर्तव्य भी।

भारत में भी मानवाधिकार संगठनो का लगभग वही स्वरूप है अधिकांश को विदेशी धन प्राप्त होता है किन्तु उसमें वामपंथी विचार वालो का वर्चस्व है। ये लोग कभी वामपंथी राज्यों की सरकारों की खोजबीन नही करते। ये कभी इस्लामिक अत्याचारों की भी टीका टिप्पणी नही करते। ये कभी आंतकवादी गतिविधियों के विरूद्ध प्रशासन की सहायता नही करते। क्याकि इनका घोषित उददेश्य है राज्य द्वारा किये गये मानवाधिकार उल्लघन की घटनाओं को उजागर करना। अन्य घटनाएँ इनके उददेश्यों से बिल्कुल बाहर है। गुजरात में गोधरा की रल जलाने की घटना की इन्होने कभी निष्पक्ष जांच नही कि क्योकि वह दो सम्प्रदायों का मामला था किन्तु गुजरात नरसहार में इन्हाने सारी सीमाए तोडकर भी सक्रियता दिखाई क्योकि वह अत्याचार राज्य प्रायोजित भी था और मानवाधिकार संगठनों के विरोधी राज्यों का भी था। इशरत जहाँ के मामले को भी उछालने का बहुत प्रयास हुआ क्योकि गुजरात की सरकार ने वहाँ चार आतंकियों को कानून विरूद्ध तरीके से मार डाला था पप्पू यादव के जेल कानून उल्लघन में इन्हे कोई गलत कार्य नही दिखा क्योकि वहाँ राज्य प्रायोजित अत्याचार न होकर राज्य प्रायोजित मदद थी फिर पप्पू यादव कोई भाजपाई या शिव सैनिक तो था नही कि मानवाधिकार संगठन पहल करते।

कोई आतंकवादी किसी निर्दोष व्यक्ति के चाहे काट कर दस टुकडे कर दे किन्तु वह मानवाधिकार उल्लंघन की अनिवाय शर्त यह रखी गई कि उसमें अत्याचार करने वाला पक्ष राज्य अवश्य हो तथा यदि राज्य भी वामपंथी विचारों का न हो तो और भी अच्छा है। मेरे विचार में मानवाधिकार की यह अवधारणा दोषपूर्ण है घातक है।

मै मानता हूँ कि पश्चिम के देशो ने बहुत चालाकी से कुछ उददेश्यों के लिए मानवाधिकार संगठन खडे किये थे उसके उददेश्यों के लिए मानवाधिकार संगठन खड किये थे उसके उददेश्य पूरे भी हुए किन्तु अब वे संगठन उसे ही कठघरे में खडा कर रहे है तो वे लोग तिलमिलाते है। भारत तो बेमतलब इस जंजाल में उलझ गया है। भारतीय प्रजातंत्र को न पश्चिमी देशा की नकल करनी है न साम्यवादी देशों की किन्तु भारत अनावश्यक रूप से पश्चिमी चकाचौध में पडकर मानवाधिकार की रट लगाने लगा है जिसका परिणाम हुआ कि भारत में व्यवस्था लगातार अविश्वसनीय होती जा रही है। पुलिस और सेना की आलोचना एक फैशन बन गया है।

मेरे लिखने का यह आशय नही है कि राज्य द्वारा प्रायोजित मानवाधिकार उल्लघन का विरोध न किया जाय। मैं ऐसे विरोध का पक्षधर हूँ किन्तु मैं इस बात का पक्षधर नही की मानवाधिकार सरक्षण में नाम पर कुछ विदेशी संस्थाओं की सहायता ली जाय। उनकी नकल की जाये अथवा मस्लिम आतंकवाद का अप्रत्यक्ष समर्थन करके सिर्फ एक वर्ग तक ही अपने विरोध को सीमित किया जावे। मानवाधिकार शब्द एक अत्यन्त ही पवित्र भावनाआ से परिपूर्ण अर्थ वाला शब्द है। इसे व्यवसायिक राजनैतिक या साम्प्रदायिक विचारों से कलुषित होने से बचाना हम आप सबका कर्तव्य है।

समीक्षा ज्ञानतत्व अंक चौरासी

विषय – मानवाधिकार आन्दोलन कितना मानवीय? कितना व्यवसाय? अंक चौरासी के उपरोक्त शीर्ष स्तम्भ लेख के संबध में बडो मात्रा में पत्र मिले है जिसमें से कुछ का संक्षिप्त यहॉ दे रहा हूँ

(1) श्री दूर्गा प्रसाद आर्य टीकमगढ मध्यप्रदेश,

आपने मानवाधिकार संगठनो के विषयों में लिखा है कि कुछ को विदेशी धन मिलना संभावित है। जब मानवाधिकार संगठनों को सरकारी मान्यता तथा अधिकार प्राप्त है तथा उसमें उच्च स्तरीय तथा स्थापित न्यायाधीशों की नियुक्ति होती है तो यह गुप्त धन प्राप्ति कैसे सभव है।

(2) श्री हरि प्रसाद अग्रवाल अध्यक्ष छत्तीसगढ सर्वोदय मंडल सतीबाजार रायपुर समीक्षा अंक चौरासी में अपने मानवाधिकार संगठनों की कार्यप्रणाली को गुजरात से जोडकर आलोचना की मुझे बहुत दुख हुआ। आपका चिन्तन करूणामयी न होकर साम्प्रदायिक सोच का लगता है आप इस्लाम को जार जबरदस्ती वाला धर्म मानते है यह आपके और खास कर सर्वोदय से जुड व्यक्ति के लिये उचित नही।

(3) श्री विजय सिंह बलवान जटपरा बुलन्दशहर उत्तरप्रदेश, अंक बयासी से चौरासी तक आपने बहुत ही तर्क पूर्ण ढंग से मानवाधिकार के ठेकेदारों की पोल खोली है उनका नाराज होना स्वाभाविक है। फांसी की सजा पुलिस द्वारा किसी अपराधी को बिना न्यायालय में ले गये ही हत्या और भीड द्वारा किसी अपराधी को बिना पुलिस और बिना न्यायालय में ही प्रस्तुत किये हत्या को आपने जिस तरह एक कडो में पिरोकर उच्चश्रृंखलता बनाम व्यवस्था की बहस छेडो है उसने उच्चश्रृंखलता समर्थकों के मुँह बन्द कर दिये है। किसी भी मानवाधिकार के ठेकेदार के पास इसका उत्तर नही है। पर उत्तर देना नही। भारत की यह बिडम्बना ही है कि गम्भीर विचार मंथन के स्थान पर मात्र हो हल्ला करके औपचारिकता पूरी करने का ढोग किया जाता है। आपने रामानुजगंज छोडकर अच्छा किया क्योंकि प्रयोग पूरा होने के बाद वहाँ अपनी उर्जा खर्च करना ठीक नही था क्या आप इस आन्दोलन मे अन्य संगठनों को भी जोडगे या अपने तरीक से ही चलने की योजना है। यदि सत्ता ने आपसे सहयोग नही किया तब क्या करेंगे। इन प्रश्नों का समाधान करें।

(4) श्री कृष्ण चन्द्र गोस्वामी श्री निकुंज बी 90 जवाहर नगर भरतपुर राजस्थान

प्रश्न – ज्ञान तत्व पढता हूँ। अनेक नये विचार मिलते है। मानवाधिकारवादी और को काम करने के लिये धन और प्रेरणा कहाँ से मिलती है धन दाताओं का उद्देश्य क्या है तथा भारत के लोग इस जाल में क्यो फस रहे है। इन बातों को थोडा और स्पष्ट करे।

(5) श्री महेन्द्र जोशी दिव्य प्रकाशन। गोपाल नगर अमृतसर 143001 समीक्षा ज्ञान तत्व अंक चौरासी प्राप्त तरह सहमत हूँ। ये संगठन एक प्रकार से आतंक वादियों एवं अपराधी तत्वों के मानवाधिकारों की तो चिन्ता करते है। किन्तु शान्ति प्रिय लोगों के विरूद्ध इन अपराधियों द्वारा किये गये। मानवाधिकार हनन की चर्चा तक नही करते।

गुजरात के नरेन्द्र मोदी ने जो किया वह भले ही गोधरा की प्रतिक्रिया ही क्यों न हा किन्तु समर्थन योग्य नही है। मैं मोदी जी क इस कृत्य का घोर विरोधी हूँ तथा मेरी अब तक की जानकारी के अनुसार आपका भी सोच यही है। माननीय अटल जी भी ऐसी ही सोच व्यक्त कर चुके है।

ठाकुर जगपाल सिंह जी की चुनाव सुधारों की सोच की अपेक्षा आपकी राजनैतिक उच्चश्रृखलता पर नियत्रण के प्रयास को मैं अधिक उपयुक्त और सार्थक मानता हूँ। चुनाव सुधारों से आशिंक ही परिणाम प्राप्त होगे मैं आपके उत्तर से सहमत हूँ।

6. श्री राजाराम गुर्जर टोंक राजस्थान

समीक्षा – मानवाधिकार संगठनों के विषय में प्रश्न खडा करके आपने साहस का काम किया है। मानवाधिकार संरक्षण के नाम पर ये लोग अपनी दुकानदारी चला रहे है। किसी नेता या अपराधी के कानूनी अधिकारो की ये जितनी चिन्ता करते है उतनी कभी भी सामान्य व्यक्ति के न्यायिक अधिकारों की नही करते। राजस्थान के हजारों के अन्तर्गत काम कर रहे शिक्षा कर्मी बेचारे कितने परेशान है। इस ओर उनका कोई ध्यान नही है।

उत्तर– मानवाधिकार आयोग और मानवाधिकार संगठन बिल्कुल पृथक पृथक है। मानवाधिकार आयोग संवैधानिक व्यवस्था है और संगठन बिल्कुल निजी। अतः मेरा लेख संगठनों के संबध में है। दूसरी बात यह है कि मानवाधिकार आयोग भी समस्याए सलझाता कम है उलझाता ज्यादा है। मेरे विचार में वर्तमान समय में व्यवस्था टूट रही है। इस समय व्यवस्था को ठीक और मजबूर करने की जरूरत है किन्तु व्यवस्था कमजोर हो रही है और मानवाधिकार संगठन व्यवस्था का कमजोर करने में सहायक हो रहे है। इस सम्बन्ध में एक लेख पृथक से जायगा। संभवत अंक नवासी में

श्री हरि प्रसाद जी को मेरे लेख से कष्ट हुआ। वे मेरे बहुत सम्मानित है। उन्हें दुख पहुचने से मुझे और अधिक दुख होता है। वे दयालु है करूणामय है। त्याग के प्रतीक है मैंने पाया कि वर्तमान समय में बढ रही समस्याएँ इन सदगुणों से बढ रही है हरि प्रसाद जी के समान लोगों के अथक प्रयासों के बाद भारत की जो तस्वीर बनी है उस तस्वीर को बदलना आवश्यक है हम अब यह नही कर सकते कि हमारी दया त्याग और करूणा के लिये दूसरों को प्रोत्साहित करते रहे। अतः हम लोगों ने बहत विचार करके तय किया है कि हम वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार अपनी सोच में फेर बदल करगे तथा न्याय और सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देगे। अतः मेरी यह मजबूरी है कि मै सत्य ही लिखूँ भले ही हमारे कुछ बुजुगा को कष्ट ही क्यो न हो।

हरि प्रसाद जी ने मुझ पर साम्प्रदायिक होने का आरोप लगाया यह अत्यन्त दुखद है। उन्हे इस तरह मुझे गाली देने से बचना चाहिये था वे मेरे सम्मानित बुजुर्ग है। यदि मैंने एक लेख लिखा जो उनकी सोच के विपरीत है तो व लेख का उत्तर देने या मेरे सोच बदलने के प्रयास की जगह मुझे साम्प्रदायिक कह दे यह गाधीवादो कहता है दया, त्याग और करूणा का अवतार घोषित करता हो वह अपने साथियों के चिन्तन पर ऐसा बन्धन लगावे यह उचित नहीं। मैं चाहता हूँ कि यदि आप लोग भारत की समस्याओं के समाधान में विफल रहे है तो नये विचार मंथन और निष्कर्ष निकालने की प्रकिया को तानाशाहो से दबाने की प्रवृति से बचें तो अच्छा होगा।

मानवाधिकार संरक्षण के संबध में इसी अंक में एक विस्तृत लेख और जा रहा है। इस लेख के बाद इस विषय की समीक्षा करना अधिक उपयुक्त होगा। अतः हम इस विषय की समीक्षा बाद म और विचार आने के बाद करेंगे।

प्रश्नोत्तर

(1) श्री कृष्ण देव जी चतुर्वेदी 522 पंचशील नगर भोपाल 462003

प्रश्न – सम्पूर्ण भारत में आपके प्रयास की चर्चा चल रही है। आपका प्रयोग भी सफल रहा है। साथियों की संख्या भी बढ रही है। किन्तु बिना किसी सवैधानिक कान्ति के आने की राह नही दिखतो आप अपन विचार लिखें।

उत्तर – अभी हम अपने विचारों का एक छोटा सा अंश एक करोड में एक आदमी तक ही पहुँचा पाये है आगे ऐसे मित्रों की तलाश है। जो विचार मंथन प्रक्रिया को आगे बढा सके। संवैधानिक क्रांति मार्ग नही है। यह तो अन्तिम परिणाम है जो लक्ष्य तक ले जायेगा। अभी तो हमारा मार्ग है ज्ञान तत्व के ग्राहकों या पाठको में विस्तार देश के विभिन्न क्षेत्रो म वैचारिक मंथन शुरू कराना त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन अभियान आदि अभी हम इतना बढ़ें तो आगे की सोचेग।

(2) श्री चन्द्रभूषण जी, शान्ति निलयम कटारी हिल रोड गया बिहार

सुझाव – ज्ञान तत्व अत्यन्त गंभीर विचार मंथन का माध्यम है यह स्वयं सिद्ध है आप वास्तव में कुछ करना चाहते ह। किन्तु मुझे लगता है कि आपको जो कार्य कठिन दिखता है उसे आप किनारे करके आगे बढ जाते ह। आप भ्रष्टाचार गुण्डागर्दा अपराध आदि का समाधान न करके व्यवस्था परिवर्तन की ओर खिसक गये इससे बहुत नुकसान हो सकता है क्योकि ये सब चीजें ही व्यवस्था को कमजोर करती है इनसे सम्पूर्ण व्यवस्था दोष पूर्ण हो जाती है। जन आंदोलन का विकल्प भी हमारे समक्ष खुला है। अपनी राय व्यक्त करें।

उत्तर – आपने जो समस्याए बताई है वे हमारी खोजी हुई ग्यारह समस्याओं के अंग है अर्थात हम इन सबको प्राथमिक समस्या मान रहे है। आप इनका समाधान सीधे समाज द्वारा करना चाहते है और मै समाज निर्मित व्यवस्था द्वारा हमारे देश में एक संवैधानिक व्यवस्था चल रही ह हम अपनी सारी ताकत लगाकर दस प्रतिशत चरित्र निर्माण करते है और व्यवस्था बीस प्रतिशत चरित्र पतन की और समाज को ले जाती है। क्या व्यवस्था पर अंकुश लगाये बिना चरित्र पतन रोका जा सकता है? आप चरित्र निर्माण में और शक्ति लगाने की बात करते है और वे व्यवस्था परिवर्तन की बात कहता हूँ। लक्ष्य दोनों का एक है किन्तु मार्ग भिन्न है। आप कम से कम लक्ष्य को तो ठीक समझ रहे है कि भ्रष्टाचार अपराध गण्डागर्दी हमारी प्रमुख समस्याएं हैं। मुझ तो हंसी आती है जब हमारे बहुत से लोग विदेशी साबुन विदेशी पेय पर्यावरण प्रदूषण बढती आबादी शराब बाल श्रम आदि को ही सबसे बडो समस्या मानकर उनके खिलाफ आन्दोलन को ही जन आन्दोलन मान लेते हैं। उनके समक्ष अपहरण मिलावट जालसाजी उतनी बडो समस्या नही जितनी पर्यावरण प्रदूषण और

विदेशी शीतल पेय। कौन समझाये ऐसे जन आन्दोलन के गुमराह मित्रों को। हमारे देश में अभी विदशी आन्दोलनों का संकट आया हुआ है हमारे देश में कुछ लोग विदेशी से धन लेकर उनके इशारे पर यहाँ नई नई समस्याओं को आगे बढाते ह और उनके समाधान के लिये आन्दोलन खडा करते है। साम्यवादी देशों की शह पर भूख शिक्षित बेरोजगारी सामाजिक असमानता, आर्थिक असमानता को प्राथमिक पंक्ति की समस्याओं में लाकर वर्ग संघर्ष का उसका मार्ग बताया जाता है तथा वर्ग संघर्ष के लिए आन्दोलनों की पृष्ठाभूमि तैयार की जाती है। इनकी शह पर श्रम शोषण के तीन सिद्धान्त 1. कृत्रिम उर्जा मूल्य नियंत्रण 2. न्यूनतम श्रम मूल्य में प्रशासनिक वृद्धि तथा 3. शिक्षित बेरोजगारी दूर करने के प्रयत्न पर पूरी सक्रियता रखी जाती है। इसी तरह पूँजोवादी देशों की शह पर तथा उनसे धन ले लेकर पर्यावरण प्रदूषण, मानवाधिकार, बालश्रम, आदिवासी हरिजन उत्पीडन, बढती आबादी, अशिक्षा, पानी का संकट आदि कम प्राथमिकता वाली भावनात्मक समस्याओं को आगे लाकर उनके समाधान के लिये आन्दोलन प्रायोजित होते ह। ये दोनों ही प्रयत्न विदेशी षडयंत्र है। हमारी ग्यारह वास्तविक समस्याओं के पीछे कोई शक्ति खडो नही होती। सच्चाई यह है कि ये दानों ही प्रकार के प्रयत्न समस्याओं में वृद्धि ही करते है। आश्चर्य ता तब होता है कि जब दोनों ही गुट श्रम शोषण के तीनों सिद्धान्तों पर एक जुट होकर काम करते है जबकि बाहर में ये खूब लडते दिखते है। अब हम इनकी पोल खोलने का बीडा उठा चुके है इसलिये भविष्य में आन्दोलन के लिये समस्या चयन का पूरी तरह निरूत्साहित करना है। काम अत्यन्त कठिन है किन्तु असंभव नही है। प्रश्न पूछिये अपने विचार लिखियें। व्यवस्था बदलेगी।

(4) श्री संतोष कुमार शर्मा शालिमार बाग दिल्ली 88

प्रश्न – (1) सुनामी का कहर गरीब देशों पर ही क्यों पडा? क्या शंकराचार्य गिरफतारी से भी इसे जोडा जा सकता है।

(2) राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने बारहवी भारतीय विज्ञान कांग्रेस में बच्चों को पांच प्रतिज्ञाएँ दिलाई है। (क) ज्ञान को उपयोग करे (ख) भ्रष्टाचार मिटाने में तत्पर रहें (ग) पांच अशिक्षितो को शिक्षित बनावें (घ) दस पेड लगायें (ड) पारदर्शी जीवन जीयें।

आपने विचार में इन प्रतिज्ञाओं का कितना महत्व है। तथा क्या परिणाम होगा।

उत्तर – सुनामी एक प्राकृतिक विपदा है। जिसका कोई भावनात्मक संबंध नही है। समुद्र के किनारे स्थित गरीब देशों पर इसका प्रभाव पडा क्योंकि उक्त क्षेत्र में समुद्र किनारे कोई धनी देश नही था। शंकराचार्य प्रकरण से इस विपदा को जोडना एक भावनात्मक दुकानदारी के अतिरिक्त और कुछ नही है। शंकराचार्य प्रकरण से इसका लेश मात्र संबंध नही है क्योकि

(क) मरने वालों की सर्वाधिक संख्या इडोनेशिया और लंका में रही

(ख) शंकराचार्य प्रकरण में सुनामी से प्रभावित नागरिकों का कोई हाथ नही था।

सुनामी के कहर से जयललिता पर कोई विपरोत प्रभाव नही पडा है।

वस्तु स्थिति यह है खाली बैठे लोगों में ऐसी अनावश्यक और महत्वहीन चर्चा उठना कोई विशेष बात नही है।

2. राष्ट्रपति जी ने पांच प्रतिज्ञाएँ कराई। यदि हम भारत की एक सौ समस्याओं को लिखकर उनका प्राथमिकता के आधार पर समाधान के महत्व का क्रम निर्धारण करें तो ज्ञान का उपयोग दसवें भ्रष्टाचार मिटाने में तत्परता पंद्रहवें पांच व्यक्तियों को शिक्षित बनाना अस्सीवें दस पेड लगाना पचासीवें और पारदर्शी जीवन जीना पांचवें महत्व की प्रतिज्ञा मानना चाहियें। उन्हाने एक गम्भीर विचारक के रूप में निष्कर्ष निकालकर कोई पांच प्रतिज्ञाए नही कराई है बल्कि एक निराश भले आदमी का एक प्रयास है। पेड लगाने या शिक्षित करने का ग्यारह चिन्हित समस्याओं के समाधान में शन्य भ्रष्टाचार नियंत्रण के प्रयास का मामूली और ज्ञान के उपयोग तथा पारदर्शिता का महत्वपूर्ण प्रभाव पडेगा। फिर भी इन प्रतिज्ञाए में काई ऐसी प्रतिज्ञा नही है। जिसका कोई विपरीत प्रभाव पडता हो। कुल मिलाकर उनकी प्रतिज्ञाएँ लाभदायक ही है।

(4) रणदीप चौधरी कोंडागाँव बस्तर 494226

आपकी पत्रिका पढो। टेप भी सुना। आप ग्यारह समस्याओं और राजनेताओं के दस नाटको से बहुत दुखी है। इस तरह इक्कीस अंक से दुखी ह और इन्दिरा जी बीस अंक से दुखी थी और बीस सूत्री कार्यक्रम चलाया था।

आपने जो ग्यारह समस्याएँ और दस नाटक लिखें है। ये तो सृष्टि के प्रारंभ से ही चल रहे है और आगे भी चलते रहेंगे। इनमें नया कुछ भी नही है। यदि आप महान बनना चाहते तो कोई नई थ्यौरी दे। मैं जानता हूँ आप दे नहीं सकते क्योंकि आप बुराई से डरते हैं। डरपोक व्यक्ति समाज सुधार कर नहीं सकता। आप में न तो हिम्मत है, न सामर्थ्य, न नई सोच का मादा। अतः इस तरह समय और शक्ति बरबाद करना ठीक नहीं। यदि जीवन में कुछ करना है तो मेरे पास कोन्डागाँव आओ। नया सोच, नया रास्ता नई पहल मिलेगी। जोवन में असफल व्यक्ति की मूर्ति बनने की अपेक्षा सफलता के प्रतोक बनो। मै अभी विनोबा जी की पुस्तक गीता प्रवचन का अध्ययन कर रहा हूँ

उत्तर– आपन हमारे ग्यारह समस्याओं और राजनेताओं के दस नाटकों को इन्दिरा जी के बीस सूत्रों से जोडा यह प्रसंग मेरी समझ में नही आया कि आपका गंभीर आशय क्या है।

मैं एक सामान्य व्यवसायी हूँ। महान बनने की तो सोच ही नही सकता। मैं तो उस चिडिया के समान हूँ जिसके अंडे समुद्र बहाकर ले जावे चिडिया समुद्र को चोंच से सुखाने का प्रयत्न कर कोई ऋषि आकर दया करें और उसके अंडे वापस करा दें। बस मेरी स्थिति वैसी ही है। ग्यारह समस्याओं से दुखी हूँ। लोग मेरी व्यथा को सुनकर दस प्रकार का नाटक करते ह और मैं दुखी और परेशान हूँ। मेरी परेशानी को देखकर कुछ और पक्षी तो चोंच से समद्र सुखाने के काम में लगे है लेकिन आप जैसे सामर्थवान विद्वान इस प्रयास को दूर से ही हास्यास्पद मूर्खतापूर्ण आदि बताकर सिर्फ छोड देने और कोंडागाँव आने की सलाह देने में ही अपने दायित्व पूरा होना मान रहे ह इससे मेरा कष्ट तो कम नही हुआ मैं जाकर आपसे मिला था किन्तु आपने उस समय भी गीता, रामायण, गांधी ओर विनोबा से नीचे की कोई चर्चा नही की थी यदि रामानुजगंज या अम्बिकापुर दूर है तो कोन्डागांव में ही इन ग्यारह समस्याओं से ग्रसित अनेक लोग है। जिन्हें आपके मार्ग दर्शन की आवश्यकता है आपने अपनी शक्ति का उपयोग करके यदि इन समस्याओं का थोडा भी समाधान किया होगा तो मुझ जैसे व्यक्ति को अरण्य रोदन की आवश्यकता नही पडती।

मै चाहता हूँ कि आपको मुझे अपने चरणों में बुलाने की चिन्ता छोड कर पहले इन समस्याओं के समाधान में लगना चाहिये। ध्यान रखिये कि आप महान बनने के लिये प्रयत्नशील भी ह और क्षमता भी रखते है तो मैं आपका किसी रूप में प्रतिस्पर्धी नही हूँ।

(5) स्वामी मुक्तानन्द सरस्वती सर्वोदय आश्रम साधुबेला हरिद्वार 249410

समीक्षा–ज्ञान तत्व में आप परिस्थितियों को जिस ढंग से देखते है और समाधान सोचते है। उसमें कई स्थान पर सहमति भी रहती है। असहमति भी विचार मंथन जारी रखकर संशोधन की आवश्यकता है। हिन्दू धर्म इस्लाम या इसाई की तरह कोई सम्प्रदाय न होकर अनेक सम्प्रदायों का समाज है इसलिये हिन्दू नाम से कोई संगठन खडा करना संभव नही हिन्दू समाज में जातिगत विषमता के साथ साथ आर्थिक विषमता बहुत गहरी है। धार्मिक और सांस्कृतिक बिन्दुओं पर राजसत्ता प्राप्त करने के लिये हिन्दू समाज को संगठित नही किया जा सकता। इस्लाम और इसाई समुदाय की सोच में सत्ता के विकेन्दीकरण को कोई स्थान नही है जबकि हिन्दू समाज में है। अतः हिन्दू समाज को पूर्ण अधिकार सम्पन्न बनाना तथा संचालन सत्ता का अधिकार गाँव तक विकेन्द्रित करना हिन्दू समाज की विशेष देन है।

वर्तमान समय है। राजनैतिक साम्राज्यवाद तथा आर्थिक सम्राज्यवाद ने मिलकर आम जनता को दबाने का भरपूर प्रयास किया है। राजनैतिक साम्राज्यवाद कुछ ढीला पडा है। अतः आर्थिक साम्राज्यवाद से सीधा टकराव से एक नई राजनैतिक शक्ति खडो हो सकती है। अतः संविधान की मौजूदा व्यवस्था को ग्राम केन्द्रित करने के लिये आर्थिक साम्राज्यवाद से संघर्ष करना आवश्यक है।

आपने ग्यारह समस्याएँ बताई है। चोरी, डकैती, मिलावट, धोखा, संग्रह के अधिकार का परिणाम है तथा बलात्कार अनियंत्रित भोग को प्रोत्साहन का। हिंसा, आतंक साम्प्रदायिकता जातीय कटुता प्रभुत्व वृद्धि की मानसिकता का परिणाम है और चरित्र पतन इन दोना का मिला जुला। इन सभी समस्याओं का कारण विकास की वह परिभाषा है। जिसमें भोग साधन वृद्धि को विकास के साथ जोडा गया है। इस परिभाषा ने सारे विश्व में हडकंप मचाया हुआ है क्योंकि हर देश एक दूसरे से भौतिक संसाधनों में आगे निकलने हेतु इन ग्यारह कुकर्मों का सहारा ले रहा है। हमें अपनी शक्ति विकास की उपरोक्त परिभाषा को बदलने में लगानी चाहिये।

मैं आपसे सहमत हूँ कि राज्यशक्ति पर समाज शक्ति का नियंत्रण होना चाहिये किन्तु राजतंत्र को कौन कोन सी शक्तियाँ मजबूर कर रही है और समाज को कौन शक्तियाँ कमजोर कर रही है जब तक यह न जाने तब तक नियंत्रण कैसे होगा? मेरे हुए है विचार में आज जो लोग समाज मे सम्मानित बने बैठे है ये साधारण लोगों के आदर्श बना और वही लोग इन ग्यारह समस्याओं का पोषण भी कर रहे ह और वही लोग इन ग्यारह समस्याओं का पोषण भी कर रहे हैं और सरक्षण भी इन शीर्ष लोगों म धर्माचार्य राजनेता उद्योगपति समाज सेवक अभिनेता बुद्धि जीवी स्मगलर माफिया और कांतिकारी सब तरह के लोग शामिल है। हम जिस यथास्थिति को तोडना चाहते हैं उस यथास्थिति का सरक्षण ये उच्च सम्मान प्राप्त लोग कर रहे ह और हम भी कही न कही इन बस के प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क में है। इन महानुभावों से असहयोग का मार्ग खोजना आवश्यक है इसी संदर्भ में गांधी जी ने अन्तिम दिनों में बिडला से संघर्ष की संभावना व्यक्त करते हुए कहा था कि सैनिक शक्ति पर लोकशक्ति की विजय का संघर्ष ही एकमात्र मार्ग है।

उत्तर– आपने राजनैतिक शक्ति के उदय में धर्म को आधार बनाने की असफलता और आर्थिक विषमता का आधार बनाने की बात कही मै उससे सहमत हूँ किन्तु मेरी सोच कोई राजनैतिक शक्ति बनने या बनाने की दिशा में नही है। वर्तमान शासन के स्थान पर मेरा या मेरे विचार समर्थको का शासन हो यह न मेरी इच्छा है और न ही मैं इससे कोई परिवर्तन की उम्मीद करता हूँ। मेरा सोच है कि संविधान की वर्तमान व्यवस्था को विकेन्द्रित करके परिवार तक ले जाना। गांधी विनोबा जयप्रकाश ने गाँव का व्यवस्था की पहली संवैधानिक इकाई माना था मैं गांव से और नीचे संवैधानिक व्यवस्था में परिवार को शामिल करन का पक्षधर हूँ किन्तु मेरा परिवार या ग्राम पर कोई अलग राग नही है। यदि अन्य साथी गाँव तक ही कहेगे तो मैं परिवार का पक्षधर होते हुए भी गांव के लिये सहमत हूँ।

आपने ग्यारह समस्याओं का कारण आर्थिक और राजनैतिक शक्ति के एकत्रीकरण का परिणाम बताया इससे भी मैं सहमत हूँ। आपने प्रगति की विश्वव्यापी परिभाषा अधिकतम भौतिक संसाधनों के विकास बताकर इस परिभाषा का बदलने की बात कही उससे भी सहमति है। आपने समाज में सम्मानित लोगों का चक्र बताकर समस्याओं के संरक्षण की बात कही उससे भी मैं सहमत हूँ आपने विकास को विश्व परिभाषा को बदलने हेतु सम्मानित लोगों को प्रत्यक्ष टकराव में आने तथा राज्यसत्ता कि अपेक्षा तथा धन सत्ता को अधिक खतरनाक माना है। मैं धन सत्ता की अपेक्षा राज्यसत्ता को अधिक घातक मान रहा हूँ। यही मेरा आप से एकमत नही है। धर्माचार्य धनपति और सत्ताधीश तीनों ही मिलकर इस षडयंत्र में शामिल है मैं इन तीनो के बीच में बैठकर इन्हें शक्ति और सरक्षण दे रहा हूँ। मेरे विचार में उक्त संविधान राजनीतिज्ञों के तो प्रत्यक्ष प्रभाव में ह किन्तु धर्माचाया और धनपतियों के प्रत्यक्ष प्रभाव में नही है। धर्माचार्य या धनपति भी राजनेताओं के माध्यम से ही संवैधानिक संरक्षण प्राप्त करते है यदि हम एक चलते हुए पंखे को डंडे से बन्द न करके उसका स्विच आफ कर दे तो अधिक बुद्धिमानी होगी यदि उस पंखे का नियंत्रण स्विच से है और वह स्विच हमारी पहुँच के अन्दर है। जब हम जानते है कि सबको संरक्षण भरतीय संविधान दे रहा है और संविधान के साथ राजनेताओं का प्रत्यक्ष घालमेल है तो हमें संविधान पर नियंत्रण करके राजनेताओं का तालमेल काट देना चाहिये। धर्माचार्य आर धनपति तो स्वयं ही कट जायेंगे क्योकि उनका सीधा संबंध संविधान से न होकर राजनीति के माध्यम से है। स्वतंत्रता के बाद गांधी जी ने महसूस किया था कि राजनैतिक शक्ति पर विजय हो चूकि है और अब राजनैतिक शक्ति से धन शक्ति के टकराव को स्थिति है। हम परिस्थियों को ठीक से समझे बिना गांधी जी के बिडला से संघर्ष के कथन को उद्वन करते है। उसी समय गांधी हत्या ने राजनैतिक सत्ता को भी स्वतंत्र कर दिया और पुनः सैनिक शक्ति लगभग उन्ही के हाथ चली गई स्थिति में हमारा संविधान सीधा टकराव संवैधानिक तरीके से संविधान में संशोधन करके पहले राज्यसत्ता को संरक्षण से दूर करने का होना चाहिए।
आपने परिवर्तन में जुड लोगों का भी राजनेताओं धर्माचार्यो पूँजीपतियों तथा अन्य लोगा से सम्बन्ध होने की बात कही है। पहली बात तो यह है कि सबके सब अपराधी हो ऐसा नहीं है। इनमें भी कुछ लोग अच्छे है और कुछ ऐसे ह जो वर्तमान परिस्थिति में ऐसा कर रहे ह किन्तु प्रवृत्ति से वैसे नही ह। दूसरी बात यह है कि हम राजनेताओं, धर्माचाया, पूँजीपतियों के विरूद्ध कोई ध्रुवीकरण भी नही कर रहे है। हम तो सिफ राजनेताओं की उच्चश्रखल संवैधानिक शक्ति के विरूद्ध अभियान खडा कर रहे है। जब ध्रुवीकरण शुरू होगा तब पता चलेगा कि कौन किधर जाता है। अभी तो टीम बन रही है कि कौन राजनैतिक उच्चश्रखलता पर अंकुश के प्रयत्नों में ताल ठोककर इस टीम से जुडा है कौन चरित्र निर्माण विदेशी कंम्पनी विरोध आदर्श गांव निर्माण आदि कार्यो में सक्रिय रहकर इस संघर्ष से दूर समाज परिवर्तन में सक्रिय रहता है और कौन यथा स्थिति के बनाये रखने का पक्षधर बनकर हमारी टीम के विरूद्ध में मैदान में उतरता है। हमारा मार्ग सीधा सपाट और एक सूत्रीय है। हम राजनीति रूपी उच्चश्रृंखला शेर को समाज के अंतर्गत किसी पिंजडे म बन्द करना चाहते है। आपसे भी निवेदन है कि आप हमारे प्रयत्नों पर पुनः विचार कर और हमें उचित मार्ग दर्शन करे।

(6) श्री रवीन्द्र सिंह तोमर संवाद सरोवर गुना मध्यप्रदेश

विषय– कानून के लिये सब समान या सबके लिए कानून । प्रजातंत्र में कानून सबके लिए समान है। वह मानता है कि निन्यान्नबे अपराधी भले ही छूट जावें किन्तु एक भी निदोष को सजा न हो जावे। इस सीमा तक दण्ड देने में सतर्कता होनी चाहिये। संविधान के अनुसार न्यायापालिका, विधायिका और कार्यपालिका पूरी तरह स्वतत्र है। किन्तु व्यवहार में ये तीना कितने स्वतंत्र है। यह शोध का विषय है।
भारत में धर्म और राजनीति का तालमेल किया गया है। धर्म व्यक्ति को अंहिसा, समानता और त्याग की प्रेरणा देकर धर्म भीरू बनाता है। समाज की इस धर्म भीरूता का लाभ उठाकर राजनीति समाज का जातियों धार्मिक संस्थाओं और सम्पदायों में बाँटकर स्वयं को मजबूर और सुरक्षित करती है। वह कभी कानून के समक्ष सब समान की दलील देती है तो कभी सबके लिये समान कानून की मांग भी करती है। समय समय पर उसकी दलील और मांग बदलते रहती है। संविधान द्वारा तीना इकाइयाँ देश का विरासत में मिली है। जिसमें राजा कहे सो न्याय को लिखित रूप देकर विधायिका और कार्यपालिका के अधिकार और कर्तव्य निश्चित किया गया है।

संघ ने समाज को अशिक्षा और धर्मभीरूता का लाभ उठाकर विद्यालयों का तो खूब विकास किया किन्तु उन्हे स्वतंत्रता नही दी। संघ धर्म को आड लेकर समान कानून के नाम पर बहुसंख्यक हिन्दू और अल्पसंख्यक मुसलमान इसाई की श्रेणी में बाटता है संघ यह भूल जाता है कि हिन्दू विभिन्न धर्म, जाति, सम्प्रदायों में बंटकर भी कानून की समानता का पक्षधर है अल्पसंख्यक भले ही अपने धर्म को प्राथमिकता देकर कानून का लाभ उठावें।

धर्म से तटस्थ रहने वाले साम्यवादियों को धर्मभीरूता और अशिक्षा ने रोक रखा है। स्वतंत्र शिक्षा नागरिक गुणों को बढाकर आत्म विश्वास और मनोबल बढाती है। वह धर्म और राजनीति को पृथक रखना भी समझती है। शंकराचार्य के प्रकारण में राजनीति ने कार्यपालिका और न्यायपालिका पर जितना ही अधिक अंकुश लगाने की कोशिश की विरोध उतना ही ज्यादा मुखर होता गया न्यायापालिका ने शंकराचार्य जी को जमानत देकर अपने सिद्धान्त की रक्षा की है। यह जमानत किसी पक्ष के लिये लाभकारी होगी यह भविष्य बतायेगा।

(7) श्री चितरंजन भारती 246 न्यू टाउनशिप पंच ग्राम असम 788802

समीक्षा—— आपने जिन शंकराचार्य जी की गिरफतारी पर हिन्दू समाज की उदासीनता का उल्लेख किया है वह स्वाभाविक ही थी क्योंकि पहली बार तो यह है कि जयेन्द्र सरस्वती जी आदि शंकराचार्य की परंपरा से नही आते दूसरो बात यह है कि जयेन्द्र जी ने अनावश्यक ही धर्म परंपरा से हटकर राजनीति से नाता जोडना शुरू किया यदि साँप से खेलने की आदत पड गई है तो साप कभी डस भी सकता है। जो स्वाभविक ही है। इस मामले में खास बात महत्व की यह है कि हिन्दुओं ने कभी संगठन को महत्व नही दिया सदा ही गुणों को महत्व दिया है। भीष्म दोणाचार्य जैसे सदपुरूष भी कौरवों का साथ देने के कारण वन्दनीय नही हो पाये थे।

अम्बिकापुर की व्यवस्था में आपकी तानाशाही प्रवृत्ति के दोनों ही पक्षा को मैने ध्यान से पढा है। मेरा यह अनुभव है कि बकवासी वक्ता सम्मेलनों का न सिर्फ समय नष्ट करते है बल्कि वे विषय पर चर्चा की गंभीरता भी समाप्त कर देते है। आपने अम्बिकापुर सम्मेलन में ऐसे वक्ताओं पर कठोरता से नियंत्रण करके बहुत अच्छा किया। इससे बातूनी लोगों से मुक्ति मिलेगी और गंभीर लोगो की सहभागिता बढगी।

(8) श्री रमेश शर्मा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान दीनदयाल उपाध्याय मार्ग नई दिल्ली 110022

सुझाव —पिछले दिनों शंकराचार्य जी की गिरफतारी ने पूरे देश में एक हलचल मचा दी है। गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के अक्ष्यक्ष श्री रवीन्द्र वर्मा जी न इस संबंध में एक लख लिखा जो सात दिसम्बर के अंग्रेजी अखबार हिन्द में छपा भी है। उसकी एक प्रति विचारार्थ और समीक्षार्थ भेज रहा हूँ।

मैं कई वर्षो से सोचता रहा हूँ कि आओ मिलकर सोचे योजना के अन्तर्गत एक श्रृंखला प्रकाशित करके अपने साथियों के अभाव में यद्यपि हिम्मत नही होती थी किन्तु अब लगता है कि आप सबके सहयोग से यह संभव हो सकता है। उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी। शंकराचार्य सरीखें सर्वोच्च धर्मगुरू की अपने ही साथी की हत्या के आरोप में गिरफतारी और जेल में अपराधियो के समान ओर साथ रखने के मामले ने हिन्दू समाज को गहरे सदमे में डाल दिया है किन्तु इस प्रकरण ने हमारे समक्ष निम्नाकित गंभीर प्रश्न भी खडे कर दियें है।

(1) क्या किसी पद तथा पदाधिकारी के बीच व्यवहार में कोई अन्तर होना चाहिए यदि नही तो क्या किसी पद पर बैठे व्यक्ति के विरूद्ध अविश्वास प्रस्ताव उस पद अपमान नही है।

(2) क्या कोई प्रजातांत्रिक व्यवस्था का अस्तित्व कानून के समक्ष सब समान के सिद्धान्त के अभाव में टिका रह सकता है। विशेषकर तब जब स्वतंत्रता के पूर्व ही आशा की गई थी।

(3) क्या कानून में सब समान का विरोध करके मानवाधिकार की सुरक्षा संभव है?

(4) क्या भारत में हम समान नागरिक संहिता के पक्षधर लोग पृथक पृथक दण्ड संहिता के पक्ष में बोल सकते ह।

(5) क्या पृथक पृथक धर्मो के आधार पर पृथक पृथक दण्ड संहिता के हम पक्षधर है।

(6) क्या हम घोषित कर सकते है कि कानून के अन्तर्गत घोषित अपराध से किसी व्यक्ति को पृथक रखा जाये।

(7) यदि किसी मामले में सभावना है कि कानून का उल्लंघन हुआ है और दण्ड सभव है तो कौन निर्णय करेगा कि संदेहास्पद व्यक्ति दोषी है या निर्दोष यह निर्णय न्यायापालिका पर छोडा जाय या यह निर्णय राजनैतिक दलो के धरना प्रदर्शन धमकी आदि के माध्यम से किया जाय?

(8) यदि शंकराचार्य की गिरफतारी के मामले में उनके साथ दुर्व्यवहार हुआ तो इस संबंध में भी तो अन्तिम निर्णय न्यायापालिका ही करगी या भीड या आन्दोलन

इस मामले में तमिलनाडु सरकार भी कटघरे में खडो है। यदि उसने अपुष्ट साक्ष्य के आधार पर इतना बडा कदम उठाया। किन्तु जिस तरह कुछ लोग इस मुद्दे को हिन्दू धर्म का अपमान घोषित कर रहे ह यदि शंकरचार्य अपराधी प्रमाणित हो गये तो फिर हिन्दू धर्म का अपमान करने का कौन दोषी माना जायेगा। कुछ लोग पूछते हैं कि अन्य धर्मावलम्बी गिरफतार होता तो यही व्यवहार होता तो वे उत्तर द कि क्या कानून में ऐसा करना उचित होगा कि किसी एक ही अपराध के लिये किसी को दण्डित करने की व्यवस्था हो और किसी को न करने की ?

सीता के विरूद्ध आरोप पर राम ने धोबी का सजा न देकर सीता को ही दोष रहित प्रमाणित हाने की परीक्षा का आदेश दिया था। हम राम को मानने वाले राम के ही विधान के विपरीत क्यों जा रहे ह।

उत्तर–– श्री रवोन्द्र सिंह जी तोमर और चितरंजन जी भारती के विचार बहस के मुद्दे न होने से मान्य ही है। श्री रमश शर्मा जी तथा रवीन्द्र वर्मा जी के विचार और आचार के बोच तालमेल पर मंथन की आवश्यकता है। दोनो ही स्थापित व्यक्तित्व है। मेरे निकट से संबध है तथा गंभीर एवं सक्रिय विद्वान है। श्री वर्मा जी न जो प्रश्न उठाये ह उन सबका मेरा उत्तर वही है। जो उनके हैं कानून कि नजर में सब समान होना चाहिए इस सिद्धान्त के अधिकतम रक्षा की जानी चाहिए किसी संदेहास्पद अपराधी के पक्ष में किसी स्थापित संवैधानिक व्यवस्था की अपेक्षा आंदोलन करना गलत परंपरा है।

मने प्रारंभ से ही समान कानून का पक्ष लिया है शंकराचार्य जी को गिरफतारी के बाद जब तोगडिया सरीखे पेशेवर धर्मात्मा चिल्लाने लगे तब मैंने अम्बिकापुर के सभी अखबारों में एक बयान देकर हिन्दू धर्मावलम्बियों की प्रशसा की कि उन्होने धैर्य से काम लिया। मैने इस संबंध में अखबारों में भी लेख लिखे जो सरगुजा के अखबारों में छपे। मेरा इस सम्बन्ध में स्पष्ट मत रहा जो ज्ञान तत्व में भी छपा शंकराचार्य प्रकरण से पूर्ण गुजरात पुलिस ने आंध में जाकर दो संदेही आतंकवादिया को गिरफतार किया था जो वहा के प्रतिष्ठित धर्मगुरू थे। उस समय हैदराबाद तथा कुछ स्थानों पर व्यापक विरोध हुआ था। मने उस समय गुजरात के नरेन्द्र मोदी सरकार के समर्थन में बयान दिया था और आन्दोलन की आलोचना की थी। मैं प्रारंभ से अब तक घोषित रूप से समान कानून में सब समान का पक्षधर हूँ। रवीन्द्र वर्मा जी को यह स्पष्ट करना चाहिए कि वे भारत में समान नागरिक संहिता के कितने पक्षधर है। यदि एक हिन्दू दो विवाह करे तो जेल और मुसलमान करे तो छूट इस संबंध में उनका क्या मत है। शाह बाना प्रकरण में न्यायालय के निर्णय के विरूद्ध उत्तरी इस्लामी भीड का आंदोलन और आंदोलन के दबाव से बदले कानून के विषय में उनकी क्या राय है। मैं अब तक ऐसा समझता हूँ कि भारत में दो राजनैतिक गिरोह सत्ता प्राप्ति के लिये दो गुटों में बटकर और संघ विराधी नाम से मैं मानता रहा हू। मैने अपनी भूमिका स्पष्ट कर दी है कि मेरा दोनों से समान सम्बन्ध है। मैं ऐसा समझाता हूँ कि इन दो गिरोह के सत्ता संघर्ष में संघ भी लाभ में है और संघ विरोधी गुट भी इसमें सर्वाधिक क्षति धर्म निरपेक्ष विचारधारा को हुई है। जिसका वर्तमान भारत में अपने आचारण में सर्वाधिक उतारने वाला आम हिन्दू है। संघ परिवार अपने राजनैतिक उददेश्यों की पूर्ति के लिये एक और तो समान नागरिक सहिता की मांग करता है। संघ विरोधी गिरोह भी शंकराचार्य प्रकरण मे तो समान कानून की बात करता है और शाह बानो मामले में विशेष कानून की। रवीन्द्र वर्मा जी को अपने पश्न का पहले खद उत्तर देना चाहिए कि कही वे किसी गिरोह के पक्षधर तो नही ह।

रमेश शर्मा जी के सुझाव से म सहमत हूँ। इससे विचार मंथन और निष्कर्ष निकालने में बहुत सुविधा होगी। मैं आपके इस कार्य में पूरा पूरा सहयोग करूगा। एक बात अवश्य आपसे कहना चाहूंगा कि ऐसे लोगों को संघ विरोधी धडे बंदी से समान दूरी बनाकर रखनी आवश्यक है। मैने आपको समय समय पर सतर्क भी किया है। जब आप गुजरात चुनाव मे भाजपा के विरूद्ध चुनाव प्रचार में गये थे। तो मैने आपको सलाह दी थी कि हमें दलगत राजनीति से दूर रहना चाहिए क्योकि ग्यारह समस्याओं के उलझाव में सभी दलों की समान भूमिका ह। हमें जब कांग्रेस विरोध कि खजली होती है। तब साम्प्रदायिकता को। मन ग्यारह समस्याओं पर एक सौ विद्वानों को चिट देकर पूछा कि ग्यारह समस्याओं की भयावहता के क्रम लिखते तो किसी मुद्दे पर सहमति नही थी। अनेक लोग तो तय ही नही कर पाये कि किस समस्या को उपर करे। वास्तव में साम्प्रदायिकता सबसे बडो समस्या प्रमाणित नही है बल्कि हम अपनी सुविधा से इन्हें उपर नीचे करते रहते ह।

दूसरी बात यह है कि हमें गांधी जी के विचारो से अधिकतम मार्ग दर्शन प्राप्त करना चाहिए। गांधी जी ने स्पष्ट मार्गदर्शन दिया था कि हम पाप स घृणा करन की आदत डालें पापो से नही। अथात हमें साम्प्रदायिक नीतियों का विरोध करना चाहिए संघ का नही। आम तौर पर हम संघ विरोध की भूमिका में आ जाते है। गांधी जी दूसरे के विचार सुनकर उसे डाटते नही थे बल्कि समझाते थे किन्तु इस सबंध में मैने अपको कुछ भिन्न पाया। इराक युद्ध के समय मैंने सद्दाम और अमेरिका दोनों को एक समान तानाशाह मानते हुए एक लेख लिखा था। आपने उक्त लेख का कोई अंश काटने की अपेक्षा मुझे कस के डांटते हुए पत्र लिखा था जो मैंने ज्ञान तत्व में छाप भी दिया था इस तरह गोधरा कांड के बाद माननीय राजीव बोरा जी ने गांधी मार्ग में एक तथ्यात्कम विश्लेषण दिया था जो मुसलमानों के कुछ विरूद्ध था। उनके लेख राजीव बोरा जी के विरूद्ध एक वातावरण बनाया। आप भी राजीव बोरा जो के उक्त लेख को ठीक नही मानते थे। ऐसे कार्यो से धड बन्दी प्रकट होकर नीयत पर उंगली उठने लगती है जो स्वतंत्र विचार मंथन में बाधक है। आप और रवीन्द्र वर्मा जी यदि धड बन्दी से उपर उठकर कुछ करने की सोच रहे ह तो मेरा आपको पूरा सर्मथन और सहयोग मिलेगा।

9.श्री रामकिशोर श्रीवास सम्पादक दैनिक राजदर्पण मालीपुरा अकोला महाराष्ट्र,

सुझाव –विश्व भर में समय की गणना और वर्ष के आकलन की अवधि एक जनवरी स इकतीस दिसम्बर ह जो हर तरह से सुविधा जनक है किन्तु भारत में यह गणना एक अप्रैल से 31 मार्च रखी गई है। यह काल गणना पूरी तरह असुविधा जनक है। इसे बदलना चाहिये।

उत्तर– मैं भी लम्बे समय से यही सोचता रहा हूँ। यह कार्य बहुत पहल होना चाहिये था किन्तु हमारी गुलाम मानसिकता हमे कुछ भी नया नही करने दती है वर्ष की गणना अप्रैल से मार्च करना बिल्कुल ही बेतुका और तर्क ही है। मैं आपकी मांग से पूरी तरह सहमत हूँ।

6/4/88/ठ प्रश्न 10. श्री वेद व्यथित संयोजक सामाजिक न्याय मंच 3/1577 वल्लभगढ हरियाणा 121004

ज्ञान तत्व के कई अंकों में आप संघ के विरोध में अतिरिक्त और कुछ नहीं लिखते। मैं आज तक नही समझ सका कि आपको संघ में क्या कोई अच्छाई नही दिखी ? मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि (1) क्या हिन्दू धर्म कि रक्षा के प्रयास करना उचित नही है। (2) यदि है तो क्या संघ परिवार गलत कर रहा है। (3) यदि सघ के प्रयास गलत है तो आप किस प्रयास के पक्षधर ह?

पूरा विश्व जानता है कि हिन्दू धर्म अकेला ही ऐसा है जो संख्या बल पर विश्वास नही करता। हिन्दू धर्म कभी आक्रामक नही रहा जबकि इस्लाम की तो बुनियाद ही संख्या विस्तार और आक्रमण से शुरू होती है। इस्लाम ने एक पाकिस्तान बना लिया और दूसरे की तैयारी है। स्वामी दयानन्द ने सबसे पहले इस खतरे को भापकर शुद्धि आन्दोलन चलाया था किन्तु स्वामी जी का नाम लेकर काम करन वाले आप इस शुद्ध आन्दोलन के विरूद्ध है। आज आर्य समाज कि स्थिति क्या है। यह आप अच्छी तरह से समझते है क्योकि आप आर्य समाज से जुड है। मैं तो देख रहा हूँ कि आर्य समाज और डी,ए,वी,स्कुल अपने उद्देश्य से भटक गये है। आप आर्य समाज की अहिसक कान्ति में सक्रियता की बात करते हैं किन्तु कहा दिख रही है वह सक्रियता आपने स्वयं अब तक कोई कार्य योजना प्रस्तुत की होती तो हम गुण दोष के आधार पर कुछ सोच पाते। किन्तु आप तो संघ के कार्यकर्ताओं का मनोबल तोडने में लगे है। जो उचित नही।

11.श्री रामप्रसाद मिश्र एच– 41 विकासपुरी नई दिल्ली 110018

समीक्षा– आपने ज्ञानतत्व अंक चौरासी में देशी विदेशी अर्थ वर्षा से लहलहाती भारत में मानवाधिकार की फसल पर बहुत अच्छा प्रकाश डाला है। पेशेवर मानवाधिकारियों के मुँह बन्द है। सब जानते हैं कि मानवाधिकार आयोगों के पूर्व अध्यक्ष तक यात्रा व्यय बढा बढा कर धन ठगने और अपनी आयु दो वर्ष बढाकर पद पर डटे रहने तक के आरोपों से घिरे रहे है। इस्लामी डालर डकारने वाले सब मानवतावादी और बाको सब अमानवीय का राग अलापने वाले अंग्रेजी अखबार तो और भी अधिक एक पक्षीय हो गये है। दुनिया को इस्लाम और ईसा के झंडे तले लाने क लिये प्रयत्नशील लोगों के हथकड भारत में भी सफलता के लिय आगे बढ रहे है। यह चिन्ता का विषय है।

12. अज्ञात मउ, उत्तरप्रेदश

अंक चौरासी मिला और पूरा पढा इस अंक में मानवाधिकर संगठनों के सबंध में कुछ गंभीर विचार प्रस्तुत किया गया है किन्तु मानवाधिकार संगठनों पर चर्चा करते समय उन सबकी चर्चा भी आवश्यक थी जो पीछे से ऐसे संगठनों का खडा करते ह या शक्ति देते है। इतिहास साक्षी ह कि धर्मान्तर राष्ट्रान्तर को जन्म देता ही है। दुनिया का चाहे कोई भी क्षेत्र हा मुस्लिम या इसाई बहुमत के समक्ष हिन्दू अल्प से अल्पतम होते गये ह जबकि भारत में अल्पसंख्यक मुसलमान निरंतर संख्या वृद्धि में लगे हैं। मुसलमानो की संख्या यदि एक प्रतिशत बढती है तो उनकी शक्ति दो प्रतिशत बढती है। भारत में आज भी गंगा यमुनी संस्कृति जीवित ह जबकि भारत के अंश अफगानिस्तान पाकिस्तान बंगलादेश में गंगा यमुनी संस्कृति के अवशेष भी नही बचे है। गांधीवादियों के पास साम्प्रदायिकता के समाधान की थोथी दलीलें मात्र है समाधान नही एक बार इस्लाम शक्तिशाली हुआ तो आगे सदा के लिये कोई मार्ग नही बचेगा।

13. डॉ अनुपम 121 बेसमेन्ट नैनीताल 263002

हमने अपने में संविधान अनावश्यक शब्द घुसाकर अब उसका इलाज कर रहे है। यदि संविधान में धर्म शब्द ही नही रहता तो धर्म निरपेक्षता की आवश्यकता नही होती है इसी तरह सम्प्रदाय शब्द ही साम्प्रदायिक एकता की आवश्यकता बन गया। पहले तो अनावश्यक शब्द इकटठ किये और अब उनका समाधान कर रहे है।

मानवाधिकार आयोग क्या करं। उसे भी तो सरकार की इच्छा का ख्याल रखना पडता है। मानवाधिकार संगठनों की तो बात ही कुछ और है।

इस्लामिक कटटरवाद का मुहतोड जवाब देने के लिये सघ का कटटरवादी होना काई गलत नही है। यदि देश की इतनी चिन्ता थी तो क्षेत्रीय भाषाओं को बोलचाल या स्थानीय उपयोग तक सीमित रखना था पहले तो क्षेत्रीय भाषाओं को बढाया गया और अब क्षेत्रीयता का राना रो रहे है। जिन अम्बेडकर जी का इतना ढोल पीट रहे ह। उनकी योग्यता का आकलन किये बीना ही सिर्फ दलित वोटों के लिये उन्हे सामने रखा जाता है। जो भी हो रहा है वह सब राजनीति के लिये है न सामाज की चिन्ता है न देश की न ही धर्म की। संघ बेचारा अकेला कितना संघर्ष करें।

14. रामगोपाल ए 2वी/94ए पश्चिम बिहार नई दिल्ली 63

आपका मानवाधिकार संबंधी लख बहुत अच्छा लगा। कुछ त्रुटियाँ ध्यान देने योग्य है –

(1) आपने पृष्ठ एक पर लिखा कि संगठन शक्ति सदा अपनत्व की ओर खीचती है जहाँ न्याय की हत्या करके अपनत्व को प्रोत्साहित किया जाता है। मैं आपके इस विश्लेषण से सहमत नही राम ने बानरों को संगठित किया तो क्या न्याय की हत्या हुई? आज हमारे समक्ष संयुक्त राष्ट्र संघ एक संगठन है। क्या उससे न्याय की हत्या हो रही है।

(2) पृष्ठ एक पर ही आपने लिखा कि इस्लाम संगठन से मिलने वाली शक्ति को धर्म मानता है। मेरे विचार में ऐसा नही है। पहले कुरान बना और बाद में इस्लाम रूपी संगठन कुरान आधारित इस्लाम का उद्देश्य पूरी दुनियाँ के लोगों में मोमिन और काफिर दो भाग करके उन्हे गुणों के आधार पर न बांटकर प्जा पद्धति के आधार पर बांटता है। उसने दुनिया के राज्यों को भी दो भाग करके दारूल इस्लाम और दारूल हरब की पहचान दी है।

(3) पृष्ठ दो पर आपने लिखा कि इस्लाम से भी अनेक लोग धर्म की अपेक्षा आजादी को अधिक महत्व देते हुए आजादी के आंदोलन में कूद पडे जबकि संघ परिवार की संख्या आजादी आंदोलन में कम रही। मेरे विचार से आपकी इस संबंध में जानकारी दोषपूर्ण है। जो मुसलमान उस समय कांग्रेस के साथ थे उनके लेख पढ तो पता चलेगा कि वे पहले मुसलमान थे कि पहले काग्रेसी फिर मुसलमानों का उनको समर्थन भी नगण्य था। संघ तो एक अराजनैतिक संगठन था अतः उसके आन्दालन में कूदने का सवाल ही नही था। हिन्दू महासभा ने पूरी तरह कांग्रेस का साथ दिया। जो जनमत संग्रह हुआ। उसमें 91.3 प्रतिशत हिन्दू मत कांग्रेस को मिल और 87 प्रतिशत मुस्लिम मत मुस्लिम लीग को। मुस्लिम बहुत क्षेत्रां से कांग्रेस की पूरो तरह जमानत जप्त हुई थी जबकि उसने वहाँ भी मुसलमान ही उम्मीदवार उतारे थे। इस तरह इतिहास की सच्चाइयों पर आप ध्यान रखें तो सुविधा होगी।

उत्तर–कुछ तथ्यों के विषय में मुझे कोई भ्रम नही है–

(1) इस्लाम एक संगठन है। उसमें धर्म का कोई लक्षण नही है।

(2) इस्लाम को मानने वाले अन्य किसी भी समुदाय की अपेक्षा धर्म के मामले में अधिक कटटर ह। वे अधिक भावना प्रधान है।

(3) ये जहाँ अल्प मत में होते है। वहाँ न्याय की मांग करना जानते है किन्तु बहुमत में होते ही न्याय देना भूल जाते है।

(4) मुसलमान भारत में लगातार अपनी संख्या वृद्धि के लिए प्रयत्नशील भी है और चिन्तित भी। यह संख्या वद्धि अभी खतरनाक स्थिति तक तो नही पहुँची है किन्तु सतर्कता आवश्यक है।

(5) हिन्दू धर्म को इस्लाम से खतरा है।

(6) स्वामी दयानन्द ने इस खतरे को महसूस करके ही हिन्दुओं को सतर्क किया था और कुछ मार्ग सुझाए थे।

(7) संघ ने इस खतरे को और भी अधिक ठीक ढंग से महसूस किया।

(8) गांधी जी इस खतरे को अच्छी तरह समझते थे किन्तु वे इस विषय से अधिक प्राथमिकता स्वराज्य को देते थे। अतः उन्होने स्वराज्य के समक्ष इस खतरे को गौण मानकर हमेशा समझौता का मार्ग अपनाया। सर्वोदय ने इस संबंध में गांधी जी को कभी नही समझा सर्वोदय भारत की समस्याओं को प्राथमिकता देने के स्थान पर संघ विरोध को ही प्राथमिकता देने लगा। संघ विरोध करते करते वे संघ विरोधी गिरोह में शामिल हो गये।

मै उपरोक्त बातों को समझता हूँ। अतः ये बातें आप बार बार मुझे बतावे यह आवश्यक नहीं। मैं संघ की हिन्दू धर्म के संबंध मे नियम पर कभी संदेह नही करता। किन्तु मै यह मानता हूँ कि संघ परिवार की नोतियाँ पूरी तरह गलत है।

(1) संघ ने हिन्दू धर्म खतरे में है का ऐसा हवा खडा किया कि अन्य दस समस्याएँ नैपथ्य में चली गई जबकि अन्य दस समस्याएँ भी साम्पदायिकता से कम महत्वपूर्ण नहीं।

(2) संघ ने हिन्दू सुरक्षा के नाम पर हिन्दू संगठन बनाने का प्रयास किया। इससे इस्लाम के दुर्गुण हिन्द धर्म में भी प्रवेश करने लगे है धीर धीरे स्थिति यह आई कि हिन्दू धर्म के समक्ष दो खतरे पैदा हो गये 1. इस्लाम क द्वारा संख्यात्मक दृष्टि से अल्पसंख्यक होने का 2. संघ के द्वारा गुणात्मक पतन का यह गुणात्मक अवनति इस सीमा तक बढो कि कुछ मामलों में तो यह अन्य कई समस्याओं की वृद्धि में सहायक होने लगी।

(3) संघ ने अपने सांस्कृतिक स्वरूप का राजनैतिक कर लिया मुसलमान इस मामले में चालाक निकले। उन्हाने भारत में अपनी स्थिति को समझा और इसलिये राष्ट्रीय राजनीति में कूदने की जल्दी नही की संघ ने हिन्दू मानसिकता को समझने में भूल की और संघ को हिन्द धर्म का प्रतिनिधि मान लिया जबकि अस्सी वर्ष बीतने के बाद भी सघ को हिन्दू अपना प्रतिनिधि नही मानत।

(4) एक राजनैतिक दल बन जाने से संघ की प्रतिस्पर्धा एक ऐसे राजनैतिक प्रतिद्वंदी से ही गई जिसमें अधिकांश हिन्दू शामिल थे संघ का एक मोर्चा बन गया और भारत को प्रतिस्पर्धी राजनैतिक समूहों में विभक्त हो गया 1. संघ समर्थक 2. संघ विरोधी। भारत में ऐसा खतरनाक ध्रुवीकरण हाने देने का सम्पूर्ण श्रेय संघ को जाता है जिसने समझदारी की अपेक्षा राजनैतिक महत्वाकांक्षा को अधिक महत्व दिया परिणाम यह हुआ कि मुसलमान संघ विरोधो मोर्चे में शामिल होकर सुरक्षित हो गये।

(5) संघ ने अपनी शक्ति को हमेशा ही over estimate किया इन्हाने एक शत्रु न बनाकर सबको एक साथ शत्रु बना लिया। सारा विश्व इस्लाम के खतरे को समझने लगा है किन्तु संघ ने इस्लाम के विरूद्ध मोचा की अपेक्षा इसाइयों और साम्यवादियों के विरूद्ध भी समकक्ष मोर्चे खोल दिये जबकि भारत के मुसलमानों ने इसाइयों से सबंध सामान्य रख और साम्यवादियों के साथ मुधर। संघ को चाहिए था कि वह कांग्रेस के साथ सामजस्य करता या इसाइयां से टकराव को टालता किन्तु संघ ने हिन्दू धर्म सुरक्षा का राजनीति के साथ ऐसा घाल मेल किया कि कांग्रेस के साथ भी उसके संबंध नही बन पाये और इसाइयों के साथ भी नही बने।

(6) संघ ने राजनैतिक ध्रुवीकरण की छटपटाहट में वैचारिक मुद्द किनारे करके भावनात्मक मुद्दे आगे बढाने शुरू किये। समान नागरिक संहिता और धर्म परिवर्तन एक वैचारिक मुद्दा था संघ ने इन मुद्दा के स्थान पर स्वदेशी और मंदिर मुद्द को आगे कर दिया स्वदेशी मुद्दा तो शुरू से ही असफल रहा। मंदिर मुद्द ने हिन्दुओं में एक भावनात्मक उबाल तो पैदा किया किन्तु वह उबाल निर्णायक राजनैतिक शक्ति तक नही पहुँच सका परिणाम बहुत भंयकर हुआ। इस समय संघ को चाहिए था कि उस भावनात्मक उबाल से जो कुछ मिला उस पर संतोष करके आगे की प्रतोक्षा करते किन्तु संघ ने भूल की और अटल जी को कभी ठीक से काम नही करने दिया। यह एक अच्छा अवसर था जब संघ विरोधी खमा कमजोर हुआ था संघ ने फिर भी मंदिर मुद्दें को हवा दिया। फटे हुये गुब्बारे के समान मन्दिर फिर खडा नही हो सका। मेरे विचार में अटल जी की सरकार बनते ही प्रवीण तोगडिया और सिंघल सरीखें लोगों के सारे अधिकार पांच वर्ष के लिये जप्त कर लेना चाहिए था। किन्तु युद्ध से सिपाहियों को शान्तिकाल में आगे करने के जो परिणाम हाते है वही हए और बना बनाया खेल बिगड गया।

प्रश्न उठता है कि इस्लाम के खतरे को समझते हए संघ के मार्ग पर यदि हम सब मिल कर आगे बढे तो दस समस्याओ का क्या होगा हिन्दू धर्मावलम्बियों के आचरण में इस्लाम की जो खामियों घुस जायेगी उसका क्या होगा। क्या भारत में ऐसी खतरनाक स्थिति आ चुकी है कि अब सब काम छोडकर हमें जेहाद लिये उत्तर जाना चाहिये क्या ऐसा कोई मार्ग नही है कि हम अन्य दस समस्याओं के साथ साथ इस साम्प्रदायिकता से भी निपट सक। क्या कोई एसा मार्ग नही है कि हम अपने हिन्दू संस्कारों की भी सुरक्षा कर ल और पहचान भी बना लें?

मेरे विचार में है। ऐसी निराशा कि कोई बात नही है कि हम इस पार या उस पार की स्थित में आ गये हो हमें बैठकर और गंभीरता से विचार मंथन करना चाहिए और तब आगे सक्रिय होना चाहिए। अब तक हम हिन्दू धर्म सुरक्षा के नाम पर धर्म को खतरे में डालने का खतरनाक खल खेल चुके है। हिन्दू धर्म को सुरक्षा तो निश्चित हुई नही उल्टे आतंकवाद, चरित्रपतन, भ्रष्टाचार, आर्थिक, असमानता, जालसाजी आदि समस्याओं में और वृद्धि होती गई कुल मिलाकर धर्म पर खतरा आ गया यदि चरित्र ही नही बचा तो कैसे बचेगा हिन्दू धर्म अतः हमें अपनी नीतियों में यू टर्न लेने की आवश्यकता है। मेरे विचार में संघ को अभी यह करना चाहिए

(क) यदि वह धर्म की रक्षा करना चाहता है तो 1. अपनी राजनैतिक महत्वाकांक्षा छोडकर नई नीति बनानी चाहिये 2. प्रवीण तोगडिया और अशोक सिंघल जैसो के पद वापस करके उन्ह धर्म जागरण तक सीमित कर द।

(3) स्वदेशी साबुन, स्वदेशी पेय जैसे अनावश्यक भावनात्मक मुद्दे वापस करके तथा स्वदेशी संवैधानिक शासन व्यवस्था का प्रारूप बनाकर उस पर ध्रुवीकरण करे।

(ख) यदि संघ धर्म रक्षा के स्थान पर हिन्दू धर्म रक्षा म सक्रिय होना चाहे तो वह

1. कांग्रेस और बो.जे.पी को नजदीक आने दे
2. इस्लाम के विरूद्ध अन्यों के साथ मैत्रीपूर्ण स्पर्धा रखे।
3. मंदिर मद्दे को समाप्त करके समान नागरिक संहिता और धर्म

परिवर्तन को नियंत्रण को मुद्दा बनावें

4.हिन्दू राष्ट्र जैसे घातक नारे बिल्क़ल छोड द।

मेरो इच्छा है कि अस्सी वर्षो के जीवन काल में संघ की नीतिया जितनी है हिन्दू जागरण में सफल हुई है। अब ध्रुवीकरण हिन्दू और गैर हिन्दू का न होकर साम्प्रदायिक और गैर साम्प्रदायिक के बीच होना चाहिए संघ को या तो धर्म की सुरक्षा का नेतृत्व करना चाहिये अथवा हिन्दू धर्म पर अब दया करके उस नइ राह चुनने का अवसर देना चाहिए। स्वामी दयानन्द के शिष्य इस संबंध में कोई निर्णायक पहल नही कर सके। किन्तु स्वामी जी के शिष्यों ने या आर्य समाज ने कहीं चौघराहट भी नही की है उनका कोई ऐसा कदम नही है। जिसने कोई नुकसान किया हो। स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज की भूमिका अपेक्षित भी रही और प्रशसनीय भी अब भी यदि कोई मार्ग निकला तो आर्य समाज उसमें पीछे नही रहेगा आर्य समाज अब भी मानता है कि यदि धर्म की चिन्ता छोडकर हिन्दू धर्म को बचाने की चिन्ता हुई तो न धर्म बचेगा। न हिन्दू विषय बहुत गंभीर है और गंभीर विचार मंथन की आवश्यकता है।

13. अजुन दुबे वाराणसी उत्तर प्रदेश।

प्रश्न–– ज्ञानतत्व पढता हूँ। आप कहें तो सर्वोदय के साथ जुडकर अपने विचार व्यक्त करते है और कही आर्य समाज से जुडकर। अंक तिरासी के पृष्ठ पंद्रह पर आपने स्वयं को आर्य समाज का प्रधान लिखा और अपने निष्कर्षो का आर्य समाज क दसवें नियम के साथ जोडा। आप स्पष्ट करे कि आप सर्वोदय और आर्य समाज दोना में है या किसी एक में आपके विचार दोनों में से किसके अधिक निकट और प्रभावित है। आप भविष्य में सर्वोदय के साथ जुडकर काम करना चाहते है। अथवा आर्य समाज के साथ जुडकर?

14. श्री कृष्णदेव सिंह जी अधिवक्ता ,मऊ, उत्तरप्रदेश

आप वाराणसी आये पर सूचना क अभाव में सम्पर्क नही हो सका। फरवरी माह में वेल्थरा रोड उत्तरप्रेदश में सर्वोदय मण्डल का सम्मेलन आयोजित कराने में व्यस्त हूँ। आपको भी आना ही है। तिथि की सूचना जायेगी।

ज्ञान तत्व अंक 85 पृष्ठ छब्बीस पर आपने लिखा कि आर्य समाज भी सक्रिय हो रहा है किन्तु मुझे तो कही भी आर्य समाज में कोई हलचल व्यवस्था परिवर्तन अथवा संविधान संशोधन के संबंध में नही दिखी। इसी तरह आपने सर्वोदय की बात की। सर्वोदय के लोग तो इस विचार से सहमत है वास्तव में तो संविधान संशोधन के ये तीनो सूत्र सर्वोदय के हो है। किन्तु मेरा अब तक का अनुभव यह ह कि इनकी अधिकृत संस्था सर्व संघ सिर्फ योजना बनाने तक सीमित है और वह योजना भी हवाई और कागजी मात्र इनसे उम्मीद करना बेकार है।

उत्तर– मैं आर्य समाज से जुडा था और जुडा हूँ। मैं वर्तमान में भी रामानुजगंज आर्य समाज का प्रधान है। रामानुजगंज में आर्य समाज के नेतृत्व में पन्द्रह वर्षो तक के अनुसंधान के बाद जो निष्कर्ष निकला वह आर्य समाज के दसवें नियम पर तो आधारित है ही महात्मागांधी का तो सम्पूर्ण चिन्तन का सार ही इस निष्कर्ष में समाहित है। हम राजनीति पर नियंत्रण के जिन तीन सूत्रों का लेकर जनमत जागरण की योजना पर काम कर रहे है वह पूरा का पूरा जय प्रकाश जी के निष्कर्षों का सार तत्व है। मेरे विचार में हमारे सोच में कुछ भी नया नही है। अतः मुझे सर्वोदय और आर्य समाज के इस सूत्र में कोई फर्क नही दिखता। किन्तु सर्वोदय और आर्य समाज इस कार्य के अतिरिक्त भी और हम कहें कि अतिरिक्त ही कार्यो में व्यस्त रहते है। उनमें मेरी कोई रूचि नही जब तक देश में ग्यारह समस्याएँ बढ रही है तथा उच्चश्रृंखल राजनीति पर कोई अंकुश नही लग रहा है भले ही उनमे कितना भी सार क्यों न छिपा हो। मैं सर्व सेवा संघ के सभी कार्यक्रमों में जाता हूँ। वे त्रिसूत्रीय संविधान संशोधन अभियान की उपयोगिता को खब अच्छी तरह समझते है किन्तु अकेले इतना बडा आन्दोलन शुरू करने की सामर्थ करने की सामर्थ नही है और संघ परिवार से गांधी हत्या तथा जे.पी. आंदोलन की सफलता के बाद के व्यवहार के बाद दूध से दो बार जल जाने क बाद छाछ फुक फक कर पीने की सर्तकता है। मै पूरी तरह सहमत हूँ कि सर्व सेवा संघ सर्वोदय कि विस्तार की अपेक्षा उसकी सुरक्षा की नीतियों पर चल रहा है जिसका परिणाम है क्षरण। वे कोई खतरा उठाने की स्थिति में अब नही है इसलिये किसी तरह यथा स्थिति बनाये रखने में प्रयत्नशील है। इस संबंध में आर्य समाज इलाहाबाद सहित लगभग पच्चीस आर्य समाजों ने मेरा भाषण कराकर सहमति व्यक्त की। अब यह हमारी कमजोरी है कि हम अब तक आगे की कोई योजना नही बना सके। सर्व सेवा संघ ने तो बाकायदा इस संबंध में प्रस्ताव भी पारित कर दिया है कि किन्तु इस संबंध में उनकी सक्रियता शून्य है क्योकि अब तक आन्दोलन का मूड नही बन रहा है। फिर भी सर्वोदय के लोग इस योजना के कही आशा रखनी चाहिये न ही निराश होना चाहिए वे जो भी करेंगे वह लाभकारी ही होगा ठीक दिशा में ही होगा भले ही गति कितनी भी कम क्यो न हो।

जहॉ तक मेरा प्रश्न है तो मैं उन सबके साथ जुडकर तथा जोडकर काम करना चाहता हूँ जो राजनीति पर अंकुश और ग्यारह समस्याओं के समाधान की दिशा में कुछ सोचना और करना चाहते हैं चाहे वह संघ परिवार हो या सर्वोदय। मैने सांप की गर्दन पकडन की योजना बनानी शुरू कर दी है। यदि अन्य लोग शराब बन्दी स्वदेशी वस्तु उपयोग हिन्दू संस्कृति सरक्षण खादी ग्राम स्वावलम्बन आदि के कार्य को प्राथमिकता दे रहे है तो यह उनका दोष नही बल्कि

हमारा ही दोष है कि हम उनको अब तक अपने कार्य की प्राथमिकताएँ ठीक स समझा नहीं पा रहे है। यदि हम और सक्रिय होकर अपनी प्राथमिकताएँ ठीक से समझा सके तो भले ही इन संगठनों के पदाधिकारीयों के समझने में देर लगे किन्तु कार्यकता तो बहुत जल्दी समझ जायेगा।